गगास

द्विमासिक ई पत्रिका

अंक-06

डॉ0 प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय, भिकियासैंण (अल्मोड़ा)

अगस्त–सितम्बर 2025

"The more I learn, the more I realize how much I don't know."

Albert Einstein

सम्पादक मण्डल

सम्पादक– डॉ० इला बिष्ट, असि० प्रो० समाजशास्त्र

सहसम्पादक– डॉ० परितोष उप्रेती, असि० प्रो० भूगोल

छात्रा सम्पादक– निशा रावत, बी०ए० पंचम सेमेस्टर
छात्र सम्पादक– सुमित बिष्ट, बी०ए० पंचम सेमेस्टर

तकनीकी सहयोग– श्री पूरन सिंह जलाल

सलाहकार– 1– डॉ० दीपा लोहनी, असि० प्रो० इतिहास
2– डॉ० सुभाष चन्द्र आर्य, असि० प्रो० हिन्दी

आवरण– हर्षिता पांडे, बी०ए० तृतीय सेमेस्टर

प्राचार्य एवं संरक्षक

प्रो० शर्मिला सक्सेना,
प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय, भिकियासैंण (अल्मोड़ा)

विषयानुक्रमणिका

01- शुभकामना संदेश

02- सम्पादकीय

03- विद्यार्थियों की कलम से

04- अतिथि की कलम से

06- उपलब्धियां

07- सुर्ख़ियों में महाविद्यालय

08- मीमांसा

09- महाविद्यालय परिवार

10- इनफॉरमेशन डेस्क

उच्च शिक्षा निदेशालय, उत्तराखण्ड

हल्द्वानी – 263139 (नैनीताल)

E-mail-higheredcation.director@gmail.com

डॉ0 विश्वनाथ खाली
निदेशक (उच्च शिक्षा)

अर्द्धशासकीय पत्रांकः 2908 /2025–26
दिनांकः 23 अगस्त 2025

महोदय,

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि राजकीय महाविद्यालय, भिकियासैंण (अल्मोड़ा) अपनी द्विमासिक ई–पत्रिका **"गगास"** का अंक 06 प्रकाशित करने जा रहा है।

मुझे आशा है कि पत्रिका में ऐसी महत्वपूर्ण, ज्ञानवर्धक एवं सारगर्भित पाठ्य सामग्री प्रकाशित की जायेगी जिससे छात्रों का सही मार्गदर्शन होगा और उनके जीवन–दर्शन , कार्य–संस्कृति और अध्ययन रूचि में आवश्यक रचनात्मक बदलाव आयेगा। छात्र–छात्राओं को अपने विचारों की अभिव्यक्ति का अवसर प्राप्त होगा एवं उनके व्यक्तित्व विकास में सहायता मिलेगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मैं महाविद्यालय के प्राचार्य, सम्पादक मण्डल , प्राध्यापकों, कर्मचारियों एवं छात्र–छात्राओं को हार्दिक शुभकामनायें प्रेषित करता हूँ।

मंगलकामनाओं सहित।

प्रो0(डा0 वी0एन0 खाली)

सेवा में,

प्राचार्य,
राजकीय महाविद्यालय,
भिकियासैंण (अल्मोड़ा)

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि राजकीय महाविद्यालय भिकियासैन के डॉ. प्रताप बिष्ट अपनी द्वि-मासिक ई-पत्रिका 'गागस' का छठा अंक प्रकाशित करने जा रहे हैं।

महाविद्यालय की प्राचार्य प्रोफेसर शर्मिला सक्सेना से भेंट के दौरान मुझे पत्रिका के संबंध में विस्तृत जानकारी प्राप्त हुई। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि महाविद्यालय अपने छात्र-छात्राओं एवं प्राध्यापकों की बौद्धिक क्षमता और रचनात्मक अभिव्यक्ति को इस पत्रिका के माध्यम से प्रकट करने का सराहनीय कार्य कर रहा है।

मैं महाविद्यालय परिवार को इस उत्कृष्ट पहल के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ। आशा है कि गुरुजनों के सान्निध्य में छात्र-छात्राएँ निरंतर प्रगति करें और उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करें।

नंदन सिंह बिष्ट
सामाजिक कार्यकर्ता
ग्राम धूरा

सम्पादकीय

हमारे महाविद्यालय की गगास ई पत्रिका के इस अंक में आप सभी का हार्दिक स्वागत है। यह पत्रिका केवल लेखों और महाविद्यालय की उपलब्धियों का संग्रह नहीं, बल्कि हमारे विचारों, सपनों और रचनात्मक अभिव्यक्ति का एक साझा मंच है।

हम जिस पहाड़ी अंचल में रहते हैं, वहाँ की प्रकृति, संस्कृति और समाज हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं। हमारा प्रयास है कि विद्यार्थी न केवल अकादमिक दृष्टि से आगे बढ़ें, बल्कि अपने परिवेश और समुदाय के प्रति संवेदनशील भी बनें।

इस अंक को तैयार करने में हमारे सभी विद्यार्थियों, अध्यापकों और सहयोगियों का विशेष योगदान रहा है। उनकी मेहनत और सृजनशीलता ने इस पत्रिका को जीवंत बनाया है।

हम आशा करते हैं कि गागस ई पत्रिका आने वाले समय में भी नई सोच और संवाद का सेतु बनेगी — जहाँ विचारों की विविधता, सृजन की स्वतंत्रता और पहाड़ की आत्मा एक साथ झलकें।

सुमित बिष्ट
छात्र संपादक
बी0ए0 पंचम सेमेस्टर

मानवजनित आपदाएँ

मानवजनित आपदाएँ वे आपदाएँ होती हैं जिनका सीधा संबंध मानव द्वारा की गई गतिविधियों से होता है। अर्थात्, वे आपदाएँ जो मानवीय लापरवाही, भूल या स्वार्थपूर्ण कृत्यों के कारण उत्पन्न होती हैं और जिनमें जन, धन एवं पर्यावरण को व्यापक क्षति पहुँचती है। आधुनिक युग में जब विज्ञान और तकनीक ने अनेक क्षेत्रों में प्रगति की है, वहीं मानवीय गतिविधियों के कारण कई प्रकार की विनाशकारी आपदाएँ भी सामने आ रही हैं।

मानवजनित आपदाओं के प्रकार:

1. अग्निकांड (Fire Accidents):

जब किसी स्थान पर आग फैलकर जन-धन की हानि और व्यापक विनाश करती है, तो उसे अग्निकांड कहा जाता है।

मुख्य कारण:

- शॉर्ट सर्किट
- गैस रिसाव
- आतिशबाज़ी
- ज्वलनशील पदार्थों का असुरक्षित भंडारण

अग्निकांड एक ऐसी आपदा है जो कभी-कभी प्राकृतिक कारणों से भी उत्पन्न हो सकती है, जैसे जंगल में सूखे के कारण स्वतः आग लग जाना।

2. औद्योगिक दुर्घटनाएँ (Industrial Accidents):

औद्योगिक दुर्घटनाएँ वे घटनाएँ होती हैं जो किसी फैक्ट्री या कारखाने में घटती हैं, जिनमें मानव जीवन, संपत्ति और उत्पादन को भारी नुकसान होता है।

मुख्य कारण:

- लापरवाही
- तकनीकी खराबी
- उपकरणों की विफलता
- प्रशिक्षण की कमी
- मानकों की अनदेखी

3. परमाणु दुर्घटनाएँ (Nuclear Disasters):

परमाणु दुर्घटनाएँ वे गंभीर घटनाएँ हैं जिनमें परमाणु संयंत्रों, अनुसंधान केंद्रों या परमाणु सामग्री के उपयोग के दौरान अनियंत्रित विकिरण (Radiation) का रिसाव होता है।
प्रभाव: यह विकिरण इतना हानिकारक होता है कि इसके दुष्प्रभाव पीढ़ियों तक देखे जा सकते हैं।
उदाहरण:
1986 – चर्नोबिल दुर्घटना (यूक्रेन)
2011 – फुकुशिमा दुर्घटना (जापान)

4. युद्ध और आतंकवाद (War and Terrorism):

युद्ध और आतंकवाद दोनों ही मानवजनित आपदाओं के अंतर्गत आते हैं जिनके परिणाम न केवल एक देश या क्षेत्र पर, बल्कि पूरे विश्व पर पड़ते हैं।
मुख्य कारण:
धार्मिक एवं राजनीतिक मतभेद
भौगोलिक असुरक्षा एवं शक्ति- असंतुलन

प्रमुख घटनाएँ:
रूस-यूक्रेन युद्ध
भारत-पाकिस्तान युद्ध
प्रथम व द्वितीय विश्व युद्ध
9/11 अमेरिका हमला
26/11 मुंबई हमला

5. संक्रामक रोग (Infectious Diseases):

संक्रामक रोग वे बीमारियाँ हैं जो वायरस, बैक्टीरिया, फंगस या परजीवी के माध्यम से एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलती हैं। ये कभी-कभी महामारी या वैश्विक महामारी (पैंडेमिक) का रूप ले लेती हैं।

प्रमुख उदाहरण:
2020 – कोविड-19 महामारी
1918 – स्पैनिश फ्लू (लगभग 5 करोड़ लोगों की मृत्यु)

6. तेल रिसाव (Oil Spills):

तेल रिसाव एक ऐसी आपदा है जिसमें कच्चा तेल या पेट्रोलियम उत्पाद समुद्र, नदी या अन्य जलस्रोतों में फैल जाता है, जिससे जलीय जीवन और पर्यावरण को भारी क्षति होती है।

मुख्य कारण:
समुद्री ड्रिलिंग में तकनीकी खराबी
पाइपलाइन में रिसाव या विस्फोट
तेल टैंकरों की दुर्घटनाएँ

प्रमुख उदाहरण:
2010 – Deepwater Horizon तेल रिसाव (मैक्सिको की खाड़ी में)
2020 – MV Wakashio (मॉरीशस में तेल रिसाव)

मानवजनित आपदाओं के प्रमुख कारण:
लापरवाही
तकनीकी खराबी
भ्रष्टाचार
युद्ध और आतंकवाद
जनजागरूकता की कमी
संसाधनों का अत्यधिक दोहन

मानवजनित आपदाओं को रोकने अथवा उनके प्रभाव को कम करने के उपाय:
1. कानूनों का सख़्त पालन
2. सुरक्षित और प्रमाणित तकनीक का उपयोग
3. प्रशिक्षण और जनजागरूकता कार्यक्रम
4. भ्रष्टाचार पर नियंत्रण
5. आतंकवाद और दंगों की रोकथाम
6. पूर्व चेतावनी प्रणाली का विकास

आपदा के पश्चात सहायता एवं पुनर्वास:
आपदा की स्थिति में, चाहे वह प्राकृतिक हो या मानवजनित, नुकसान तो होता ही है। अतः आपदा के बाद प्रभावित लोगों की सहायता और पुनर्वास अत्यंत आवश्यक हो जाता है। इसके लिए देश में विभिन्न स्तरों पर सहायता प्रदान की जाती है, जिससे सामान्य जनजीवन को पुनः सुचारु रूप से चलाया जा सके।

1. ग्राम स्तर पर सहायता (Village Level): जब आपदा आती है (जैसे बाढ़, सूखा, तूफान, भूकंप), तो सबसे पहले गांव के लोग और पंचायत ही प्रभावित होते हैं। इसलिए ग्राम स्तर पर त्वरित सहायता और स्थानीय सहभागिता सबसे ज़रूरी होती है। ग्राम स्तर पर दी जाने वाली सेवाएं निम्नलिखित है-

स्थिति की रिपोर्टिंग
- ज़रूरतमंद परिवारों को राहत सामग्री
- मृतकों एवं घायलों की पहचान
- प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाएँ
- भोजन एवं पेयजल की आपूर्ति
- स्कूल/पंचायत भवन को शरण स्थल में बदलना

2. जिला स्तर पर सहायता (District Level): आपदा प्रबंधन में जिला स्तर की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है क्योंकि आपदा की स्थिति में सबसे पहली और प्रभावी प्रतिक्रिया जिला प्रशासन द्वारा दी जाती है। ज़िलाधिकारी (DM) आपदा के समय जिले के मुख्य प्रभारी होते हैं, जो बचाव, राहत, पुनर्वास और पुनर्निर्माण कार्यों का समन्वय करते हैं। उनके नेतृत्व में विभिन्न विभाग जैसे स्वास्थ्य, पुलिस, सिंचाई, पंचायत आदि मिलकर तात्कालिक राहत कार्यों को अंजाम देते हैं।जिला प्रशासन द्वारा दी जाने वाली सेवाएं निम्नलिखित है-
- प्रभावित क्षेत्रों का तत्काल सर्वेक्षण
- राहत शिविरों की समुचित व्यवस्था
- पशुओं के लिए चारा एवं उपचार
- स्वच्छता, भोजन, पेयजल की आपूर्ति
- बच्चों, महिलाओं व वृद्धों के लिए विशेष सुविधाएँ
- वस्त्र, कंबल आदि का वितरण
- स्वयंसेवी संस्थाओं (NGO) द्वारा सहायता

3. राज्य स्तर पर सहायता (State Level): आपदा प्रबंधन में राज्य स्तर की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है क्योंकि राज्य सरकार आपदा के दौरान नीति निर्धारण, संसाधनों का आवंटन और राहत कार्यों की निगरानी करती है। राज्य में मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (SDMA) कार्य करता है, जो आपदा की योजना, तैयारी और समन्वयन करता है। राज्य सरकार द्वारा दी जाने वाली सहायता निम्नलिखित है-

- राज्य आपदा कोष से वित्तीय सहायता
- राहतकर्मियों और मेडिकल टीमों की तैनाती (जैसे NDRF, SDRF)
- राशन, दवाइयाँ, पानी की आपूर्ति
- मृतकों व घायलों के परिजनों को मुआवज़ा
- पुनर्निर्माण एवं पुनर्वास हेतु योजनाएँ और पैकेज

निष्कर्ष:

आपदा चाहे प्राकृतिक हो अथवा मानवजनित, उसका प्रभाव विनाशकारी ही होता है। वह किसी एक व्यक्ति को नहीं, बल्कि सम्पूर्ण समाज और कभी-कभी पूरे विश्व को प्रभावित करती है। आधुनिक युग में आपदाओं की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है, जिसका प्रमुख कारण मानव का स्वार्थ है। अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए मानव प्रकृति का अत्यधिक दोहन कर रहा है, जिससे पारिस्थितिक संतुलन बिगड़ रहा है और अनिश्चित व असमय आपदाओं को बढ़ावा मिल रहा है।

आज ज़रूरत है कि मानव अपने स्वार्थों को सीमित करे और प्रकृति के संरक्षण की ओर गंभीरता से ध्यान दे। तभी हम आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित और संतुलित भविष्य सुनिश्चित कर पाएँगे।

निशा रावत
बी0ए0 पंचम सेमेस्टर

Mental Health Issues and Challenges

Introduction

Hello to everyone, my name is Sumit Bisht from Bachelor of Arts (Dr. Pratap Bisht Govt degree college bhikiyasen). Today I am going to share my thoughts on the topic “Mental Health Issues and Challenges.”

In today’s competitive lifestyle, almost every person is running behind success, money, and recognition. In this race, one important thing is often ignored, and that is mental health. A person may have a strong and healthy body, but if the mind is not at peace, life will always feel incomplete. Mental health decides how we think, how we behave, and how we face challenges in life. According to me, taking care of our mind should be given the same importance as we give to our physical body.

Causes of Mental Health Problems

There are many reasons why people suffer from mental disturbance. One of the biggest causes is overthinking. Many people keep repeating the same thought in their mind again and again. This not only wastes energy but also makes the person restless.

Another reason is economic and family pressure. Adults carry a lot of responsibility related to job, income, and family matters. These constant worries keep their mind under stress.

Young people and students also face heavy stress due to competitive exams. They spend long hours studying without proper rest. In my opinion, studying is good, but over-study is harmful, because the brain also needs relaxation. A lack of sleep also damages mental health. Science has proved that every human body needs 7–9 hours of sleep daily. Without this rest, the mind becomes irritated and loses focus.

Other causes include loneliness, relationship tensions, and the negative impact of social media. People who have no close friends to share their problems with often feel isolated. On the other side, many compare their life with others on social media, which creates jealousy and low self-confidence.

Short causes:

- Overthinking
- Family and money pressure
- Study and exam stress
- Lack of sleep
- Loneliness and social media

Effects of Mental Health Problems

When a person's mental health is not good, it reflects in his daily life. Many people become silent and start living alone. They stop communicating with friends or family members. Some turn aggressive and violent, showing anger towards themselves and others. According to me, this stage is very dangerous because a person loses control over his mind and actions.

In extreme cases, people even take wrong steps like suicide. Students who face heavy study pressure lose their focus and confidence. Adults who face family and economic stress find it difficult to work properly. Slowly their productivity decreases, and family life also becomes disturbed. Some people even develop serious mental disorders where they start behaving abnormally.

👉 **Short effects:**

- Isolation and sadness
- Aggression and violence
- Wrong steps like suicide
- Loss of focus in studies
- Low productivity in work

Remedies and Solutions

The best part is that mental health problems can be treated and prevented if a person takes the right steps at the right time. The simplest and most powerful solution is meditation. Just ten minutes of deep breathing and silence daily can reduce stress and bring peace to the mind. Along with meditation, activities like listening to music, singing, or dancing work like natural therapy. These hobbies refresh the mood and bring happiness.

Traveling is also a great way to heal the mind. Visiting new places and experiencing nature fills a person with positive energy. Having even one close friend with whom we can share problems also gives strong emotional support. Sports and games, whether physical or online, are helpful for students to take a break from studies and refresh the brain.

Sleep is another important factor. Without proper sleep, the human brain cannot function properly. Therefore, it is necessary for every person to sleep 7–9 hours daily. Along with this, small hobbies like painting, reading, or gardening can also reduce stress. According to me, every person should include at least one positive habit in their daily life to keep the mind calm.

👉 **Short solutions:**

- Meditation
- Music and hobbies
- Traveling
- Good friendship
- Sports and games
- Proper sleep

Conclusion

Mental health is one of the most important issues in the modern world. The causes may be overthinking, family pressure, exam stress, lack of sleep, or loneliness, but the effects are always dangerous. From sadness and isolation to aggression, wrong decisions, and even suicide, poor mental health can destroy lives.

At the same time, solutions are always available. Meditation, music, traveling, games, hobbies, sleep, and emotional support from friends can save a person from mental illness. In my opinion, society should openly talk about these problems instead of hiding them, so that people feel free to share their struggles.

At last, I want to say: “Healthy mind means healthy life.” If our mind is strong and peaceful, we can face every challenge of life with courage and confidence.

सुमित बिष्ट
बी0ए0 पंचम सेमेस्टर

माननीय विधायक स्व0 डॉ0 प्रताप बिष्ट जी

समाजसेवी, प्रतिभावान, कुशल एवं दूरदर्षी राजनेता माननीय विधायक स्व0 डॉ0 प्रताप बिष्ट जी का जन्म दिनांक 20 जून 1960 को उत्तराखण्ड के सुदूर ग्रामीण अंचल अल्मोड़ा जनपद के ग्राम इण्डा (भिकियासैंण) में स्वर्गीय हीरा सिंह बिष्ट जी एवं स्वर्गीय उछपा देवी के घर हुआ था। अपने तीन भाइयों में ये सबसे छोटे थे। इनके सबसे बड़े भाई (अग्रज) स्वर्गीय सोबन सिंह बिष्ट एवं मझंले भाई स्वर्गीय दुर्गा सिंह बिश्ट थे। सन् 1993 में श्रीमती गंगा बिश्ट से शादी के उपरान्त वैवाहिक जीवन में प्रवेष किया। तदोपरान्त अभिनव बिष्ट के रूप में पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई जो कि कम्प्यूटर साइन्स में बी0टैक के उपरान्त वर्तमान में हैदराबाद में सॉफ्टवेयर इंजीनियर के रूप में कार्यरत हैं। माननीय विधायक जी की धर्मपत्नी श्रीमती गंगा बिश्ट जी ने राजकीय बालिका इण्टर कालेज, अल्मोड़ा में संस्कृत प्रवक्ता के रूप में क्षेत्र की सेवा की तथा वह सन् 2020 में सेवानिवृत्त हुईं।

माननीय विधायक जी ने अपनी माध्यमिक षिक्षा गढ़वाल से की, इस दौरान ही उन्होने उत्तराखण्ड के एक बड़े भू-भाग को भौगोलिक एवं सांस्कृतिक रूप से जाना और वे यहाँ की आम जन समस्याओं से परिचित हुए। छात्र जीवन से ही उनका सामाजिक सरोकारों एवं संस्कृति से अटूट प्रेम रहा, जिस कारण वे क्षेत्रीय जनता की मुखर आवाज बने। इस कारण ही उन्होने सन् 1984-86 में भिकियासैंण क्षेत्र के लोगों को पानी उपलब्ध कराने के लिये जनव्यापी आन्दोलन एवं अनशन किये। उनके इन अथक प्रयासों के परिणामस्वरुप ही आज भी क्षेत्रीय जनता पानी का एक घूंट भी पीते समय माननीय विधायक डॉ0 प्रताप बिष्ट जी का आभार व्यक्त करती है।

माननीय विधायक जी ने डी0एस0बी0 परिसर नैनीताल से स्नातक की शिक्षा-दिक्षा के दौरान सचिव पद पर चुनाव जीता।

इस प्रकार छात्र जीवन से ही सक्रिय राजनीति एवं मानस खण्ड के सरोकार को हमेषा मुखरता से उठाते रहे। जो कि माननीय के षोध के षीर्शक “उत्तराखण्ड राज्य प्राप्ति आन्दोलन का ऐतिहासिक अध्ययन्” से भी ज्ञात होता है। इन्होंने अपनी षोध उपाधि कुमाऊँ विष्वविद्यालय डी0एस0बी0 परिसर नैनीताल से अर्जित की। इन्होंने अपना षोध कार्य डॉ0 अजय रावत, आचार्य एवं विभागाध्यक्ष इतिहास विभाग के निर्देशन में पूर्ण किया। माननीय विधायक जी को, उत्तराखण्ड क्रान्ति दल (यू0के0डी0) जिसकी स्थापना 24-25 जुलाई 1979 को हुई, के गणमान्य सदस्य के रूप में जाना जाता था।

माननीय विधायक डॉ0 प्रताप बिष्ट जी ने अपना पहला चुनाव विधानसभा क्षेत्र भिकियासैंण से सन् 1997 में यू0के0डी0 से लड़ा, परन्तु विजय प्राप्त नहीं कर पाये। सन् 2002 में पुनः भारतीय राश्ट्रीय कांगेस के चुनाव चिन्ह पर विधानसभा क्षेत्र भिकियासैंण से चुनाव लड़ा, जिसमें उन्होने अपने निकटतम् प्रतिद्वन्दी निर्दलीय उम्मीदवार श्री लीलाधर को हराया।

सन् 2007 में भारतीय जनता पार्टी के उम्मीदवार श्री सुरेन्द्र सिंह जीना से पराजित हुए। डॉ0 प्रताप बिश्ट एवं क्षेत्रीय जनता के अथक प्रयासों से दिनांक 2 अगस्त 2006 को राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण की स्थापना हुई। जो कि फरवरी 2018 में अपने भवन में स्थापित हो गया। दिसम्बर 2014 में तत्कालीन माननीय मुख्यमन्त्री श्री हरीश चन्द्र सिंह रावत जी ने क्षेत्रीय जनता की मांग के अनुरूप डॉ0 प्रताप बिष्ट जी के नाम पर राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण का नाम डॉ0 प्रताप बिष्ट, राजकीय भिकियासैंण कर दिया। डॉ0 प्रताप बिष्ट की मृत्यु दिनांक 19 मार्च 2008 को हुई।

डॉ0 प्रताप बिष्ट, राजकीय भिकियासैंण का कुल भूभाग क्षेत्रफल 1.46 एकड़ (5908 वर्गमीटर) है। जिसके भूदानकर्ता श्री नन्दन सिंह बिश्ट पुत्र स्वर्गीय श्री त्रिलोक सिंह बिश्ट, श्री देव सिंह पुत्र स्वर्गीय श्री खीम सिंह, श्री उमेष चन्द्र पुत्र श्री देवीदत्त, गोपाल दत्त पुत्र श्री गिरधारी लाल व श्री गंगा सिंह पुत्र श्री गोपाल सिंह हैं।

सम्पर्क सूत्र:

श्रीमती गंगा बिष्ट (सेवानिवृत्त प्रवक्ता, संस्कृत) पत्नी स्व0 डॉ0 प्रताप बिश्ट
श्री कृपाल सिंह रावत, भिकियासैंण
श्री पंकज बिष्ट, भिकियासैंण

नोट- यदि किसी गणमान्य व्यक्ति का महाविद्यालय निर्माण में योगदान रहा हो जिसका उल्लेख हम इस पत्रिका में जानकारी नहीं होने के कारण नहीं कर पा रहे हैं, इसके लिये महाविद्यालय परिवार क्षमा प्रार्थी है।

श्री साविर हुसैन
असि0 प्रोफेसर
रसायन विभाग

अतिथि की कलम से

उत्तराखंड में बोलियाँ, लोक संस्कृति और मौखिक परंपराएं

बोलियाँ केवल भाषाई भिन्नताएँ नहीं होतीं—वे सांस्कृतिक विरासत की संवाहक होती हैं, जो भौगोलिक, सामाजिक और ऐतिहासिक परिस्थितियों से आकार लेती हैं। इन बोलियों का संरक्षण और शिक्षण क्षेत्रीय लोक संस्कृति को बनाए रखने के लिए अत्यंत आवश्यक है। परंपरागत रूप से, ये संस्कृतियाँ स्थानीय बोलियों की मौखिक परंपराओं के माध्यम से संरक्षित और आगे बढ़ाई जाती थीं।

मलेशिया की एक कहावत है: "बहासा जिवा बंग्सा"—अर्थात् "भाषा राष्ट्र की आत्मा होती है।" यह इस बात को रेखांकित करती है कि भाषा ही व्यक्ति की पहचान और आत्मा को परिभाषित करती है। यह कथन उत्तराखंड के संदर्भ में विशेष रूप से प्रासंगिक है, जहाँ आज की युवा पीढ़ी अक्सर कहती है—"मैं गढ़वाली या कुमाऊँनी समझ तो सकता हूँ, लेकिन बोल नहीं पाता।" लेकिन यदि कोई किसी बोली को समझ सकता है, तो थोड़े अभ्यास से वह उसे बोल भी सकता है।

उदाहरण के लिए, मैं थोड़ा बहुत तमिल समझता हूँ, इसलिए थोड़ा बोल भी लेता हूँ। मुझे नेपाली और बंगाली लगभग 80% समझ में आती हैं, और मैं इन्हें लगभग 60% बोल भी सकता हूँ। मेरी बेटियाँ बंगाली धाराप्रवाह बोलती हैं—उनकी माँ की वजह से।

लेकिन बोलियों के लुप्त होने का एक प्रमुख कारण यह है कि जो उत्तराखंडी माता-पिता शहरों में आकर बसे, उन्होंने अपने बच्चों को अपनी मातृभाषा बोलने के लिए प्रोत्साहित नहीं किया। इसके बजाय उन्होंने हिंदी और बाद में अंग्रेज़ी को प्राथमिकता दी। शायद वे नहीं चाहते थे कि उनके बच्चे एक ग्रामीण या पिछड़ेपन की पहचान से जुड़े रहें।

लेकिन यह समझना जरूरी है कि भाषा किसी भी संस्कृति की नींव होती है। जब कोई पीढ़ी अपनी बोली बोलना बंद कर देती है, तो वह अपनी सांस्कृतिक जड़ों से कट जाती है। आज कई शहरी उत्तराखंडी युवा अपनी संस्कृति से भावनात्मक रूप से कटे हुए हैं। मेरे अनुमान से लगभग 50% शहरी उत्तराखंडी युवा अन्य समुदायों में विवाह कर रहे हैं। यद्यपि यह सामाजिक प्रगति को दर्शाता है, परंतु इससे भविष्य की पीढ़ियों में बोलियों और सांस्कृतिक परंपराओं के संरक्षण को लेकर चिंता भी उत्पन्न होती है।

यहाँ तक कि पारंपरिक पहनावे—जैसे कि कुर्ता-पायजामा या धोती—भी अब शायद ही कभी देखे जाते हैं, यहाँ तक कि धार्मिक या सांस्कृतिक आयोजनों में भी। अब ये वस्त्र केवल शादियों या औपचारिक आयोजनों तक सीमित रह गए हैं। कभी-कभी तो ऐसा भी लगता है कि राजनीतिज्ञों की पारंपरिक पोशाकों में छवि ने आम लोगों को इन्हें रोजमर्रा में पहनने से हतोत्साहित कर दिया है।

पहाड़ी शादियाँ, जो कभी हल्दी हाथ, मंगल गीत जैसी विशिष्ट परंपराओं से भरी होती थीं, अब बदल गई हैं। पहले जहाँ गाँव की महिलाएँ तुरंत गीत गा देती थीं, अब उनकी जगह पेशेवर गायक, डीजे या मोबाइल रिकॉर्डिंग ने ले ली है। दूल्हे या रिश्तेदारों पर बनाए गए मज़ेदार, चुटीले गीत अब लगभग भुला दिए गए हैं—यहाँ तक कि गाँवों में भी। अब तो दोपहर में शादियाँ होना आम बात हो गई हैं—कहा जाता है कि यह कानून-व्यवस्था की स्थिति के कारण है।

ऐतिहासिक रूप से, लोकगीत अनपढ़ पहाड़ी महिलाओं द्वारा रचे जाते थे, जब वे खेतों में काम करती थीं, पानी भरती थीं या लकड़ी इकट्ठा करती थीं। ये गीत उनके सुख-दुख, संघर्ष और सपनों को अभिव्यक्त करते थे और मौखिक परंपरा के माध्यम से पीढ़ियों तक आगे बढ़ते थे।

उत्तराखंड में आज भी समृद्ध और विविध लोक संस्कृति है, जो गाँवों के मेलों और कौथिक जैसे पर्वों में देखी जा सकती है। इस संस्कृति को जीवित रखने के लिए यह जरूरी है कि हम स्थानीय बोलियों को बढ़ावा दें। ये बोलियाँ ही लोक परंपराओं, रीति-रिवाजों और अनुष्ठानों की मूल आधारशिला हैं। यदि इन बोलियों का बोलचाल में ज्ञान समाप्त हो गया, तो मौखिक परंपराओं का संचार रुक जाएगा, जिससे एक अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर खोने का खतरा है।

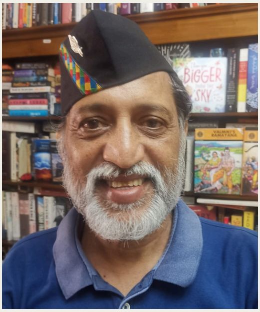

श्री देवेंद्र बूडाकोटी
समाजशास्त्री

नवनियुक्त छात्र संघ

दिनांक- 27 सितम्बर 2025

गीतांजलि बिष्ट
अध्यक्ष

सुमित बिष्ट
कोषाध्यक्ष

धीरज सिंह
विश्वदियालय प्रतिनिधि

उपलब्धियाँ

माह- अगस्त 2025

दिनांक- 14 अगस्त 2025

स्वीप कार्यक्रम के अंतर्गत आजादी का पर्व लोकतंत्र का गर्व के तहत मतदान जागरूकता के लिए स्लोगन प्रतियोगिता का किया गया आयोजन।

दिनांक- 22 अगस्त 2025

महाविद्यालय में नवप्रवेशित छात्रों के लिए आयोजित किया गया दीक्षारंभ कार्यक्रम

दिनांक-9 सितंबर 2025

रोवर रेंजर्स इकाई के तत्वाधान में अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस के अवसर पर आयोजित की गयी पोस्टर कार्यक्रम

दिनांक-10 सितंबर 2025

महाविद्यालय की रोवर रेंजर्स इकाई के तत्वाधान में धूमधाम से मनाया गया पंचमढ़ी दिवस

दिनांक-12 सितंबर 2025

महाविद्यालय में एंटी ड्रग्स के तत्वाधान में जन जागरूकता कार्यक्रम का किया गया आयोजन

दिनांक-12 सितंबर 2025

महाविद्यालय में इतिहास विभाग की ओर से गोविंद बल्लभ पंत की जयंती पर निबंध लेखन और पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया

दिनांक-13 सितंबर 2025

महाविद्यालय के भौतिक विज्ञान विभाग ने आनलाइन माध्यम से व्याख्यान कार्यक्रम का किया आयोजन

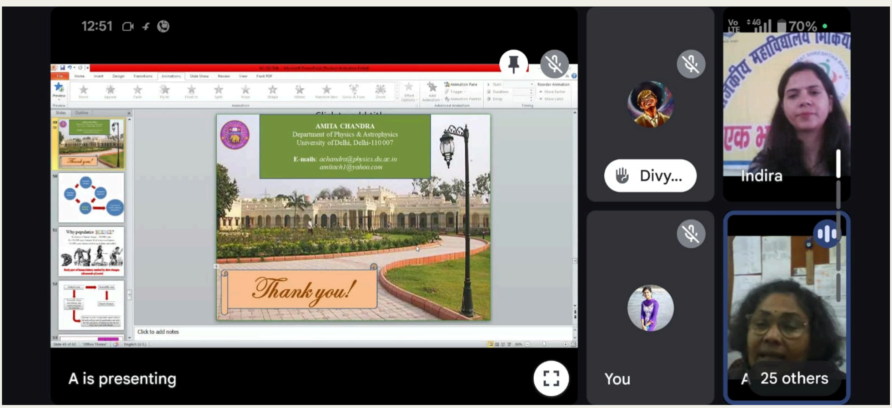

दिनांक-15 सितंबर 2025

महाविद्यालय की रोवर्स रेंजर्स इकाई के तत्वाधान में ‘हिमालय दिवस’ कार्यक्रम का किया गया आयोजन

दिनांक-16 सितंबर 2025

महाविद्यालय में हिंदी दिवस के अवसर पर हिंदी विभाग द्वारा मनाया गया हिंदी दिवस

दिनांक-22 सितंबर 2025

महाविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग द्वारा “उत्तराखंड में सामाजिक परिवर्तन” विषय पर एक व्याख्यान कार्यक्रम का किया गया आयोजन

दिनांक-22 सितंबर 2025

रोवर्स रेंजर्स इकाई के तत्वाधान में स्वच्छता ही सेवा के अंतर्गत आयोजित किया गया स्वच्छोत्सव अभियान

सुर्ख़ियों में महाविद्यालय

महाविद्यालय में हुई मतदाता जागरूकता प्रतियोगिता

भिकियासैण। डा. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में बुधवार को स्वीप कार्यक्रम के अंतर्गत अगस्त माह की थीम पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। आजादी का पर्व लोकतंत्र का गर्व के तहत मतदाता जागरूकता के लिए स्लोगन प्रतियोगिता हुई। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय की प्राचार्य प्रो. शर्मिला सक्सेना ने की। जबकि संचालन स्वीप प्रभारी दिनेश कुमार ने किया। प्रतियोगिता में निर्णायक की भूमिका डॉ. इला बिष्ट, डॉ. दीपा लोहनी एवं डॉ. सुभाष चंद्र आर्य ने निभाई। इस दौरान हर्षिता प्रथम, रश्मि भंडारी द्वितीय और निशा रावत तृतीय स्थान पर रहीं।

राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में मतदाता जागरूकता प्रतियोगिता का आयोजन

भिकियासैण (अल्मोड़ा)। डा. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में आज बुधवार को स्वीप कार्यक्रम के अंतर्गत अगस्त माह की थीम पर कार्यक्रम आयोजित किया गया।
'आजादी का पर्व लोकतंत्र का गर्व' के अनुसार मतदाता जागरूकता हेतु स्लोगन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आयोजन महाविद्यालय प्राचार्य प्रोफेसर शर्मिला सक्सेना की अध्यक्षता में हुआ। कार्यक्रम का संचालन स्वीप प्रभारी दिनेश कुमार द्वारा किया गया
स्लोगन प्रतियोगिता कार्यक्रम में निर्णायक मंडल में डॉ. इला बिष्ट, डॉ. दीपा लोहनी एवं डॉ. सुभाष चंद्र

आर्य ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान हर्षिता बीए तृतीय सेमेस्टर, द्वितीय स्थान रश्मि भंडारी बीए तृतीय सेमेस्टर, व तृतीय स्थान निशा रावत बी ए पंचम सेमेस्टर ने प्राप्त किया।
कार्यक्रम में महाविद्यालय के प्राध्यापक एवं कर्मचारी के साथ ही ईएलसी प्रतिनिधि व कैम्पस एम्बेसडर उपस्थित रहे।

नव प्रवेशित छात्रों के लिए दीक्षारंभ समारोह का आयोजन

भिकियासैंण। डा. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय में नव प्रवेशित छात्रों के लिए दीक्षारंभ कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ मां सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। प्राचार्य प्रो. शर्मिला सक्सेना ने नव प्रवेशित छात्रों का स्वागत करते हुए नियमित रूप से कक्षा में उपस्थित रहने और अनुशासन बनाए रखने पर जोर दिया व उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। दीक्षारंभ कार्यक्रम के संयोजक डा. गौरव कुमार ने दीक्षारंभ, उद्देश्य एवं इसके महत्व से छात्रों को अवगत कराया। डा. विश्वनाथ पांडे ने छात्रों को महाविद्यालय में गठित विभिन्न समितियों और आयोजित की जाने वाली विभिन्न गतिविधियों से छात्रों को अवगत कराया।

डा. दयाकृष्ण ने विज्ञान विषय में रोजगारपरक संभावनाओं पर प्रकाश डालते हुए छात्रों का उचित मार्गदर्शन किया। डा. कौशल अग्रवाल ने अंग्रेजी विषय में स्कोप, डा. इला बिष्ट ने समाज शास्त्र विषय में स्कोप से छात्रों को अवगत कराया और साथ ही महाविद्यालय की ई-पत्रिका गगास के विषय में बताते हुए छात्रों को अपनी प्रविष्टियां पत्रिका में देने हेतु प्रेरित किया। डा. सुभाष चंद्र ने हिंदी विषय, डा. दिनेश कुमार ने राजनीति विज्ञान विषय से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी छात्रों के साथ साझा की। डा. राजीव कुमार ने छात्रों को वाणिज्य विषय और इसके स्कोप के संबंध में छात्रों को बताया, साथ ही उनके द्वारा महाविद्यालय के यूट्यूब और फेसबुक पेज की जानकारी दी गई। डा. सोनम ने वनस्पति विज्ञान और डा. इंदिरा ने भौतिक विज्ञान विषय से जुड़ी जानकारियां छात्रों को दी।

कार्यक्रम का संचालन इतिहास विभाग प्रभारी डा. दीपा लोहनी ने किया। कार्यक्रम में महाविद्यालय के समस्त प्राध्यापक, शिक्षणेत्तर कर्मचारी एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

22/08/2025 अमर उजाला

विद्यार्थियों को दी विषय उपयोगिता की जानकारी

भिकियासैंण (अल्मोड़ा)। महाविद्यालय भिकियासैंण में नव प्रवेशित विद्यार्थियों के लिए दीक्षारंभ कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस मौके पर प्रवक्ताओं ने विद्यार्थियों को संबंधित विषय की उपयोगिता सहित अन्य की जानकारी दी।

दीक्षारंभ कार्यक्रम का किया गया आयोजन

प्राचार्य प्रो शर्मिला सक्सेना ने विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए उन्हें नियमित रूप से कक्षाओं में उपस्थित रहने, अनुशासन बनाए रखने और मेहनत से अध्ययन करने की बात कही।

संयोजक डॉ. गौरव कुमार ने दीक्षारंभ कार्यक्रम के उद्देश्य और इसके महत्व के बारे में बताया। संचालन इतिहास विभाग प्रभारी डॉ. दीपा लोहनी ने किया।

यहां डॉ. विश्वनाथ पांडे, डॉ. दयाकृष्ण, डॉ. इला बिष्ट, डॉ. कौशल अग्रवाल, डॉ. सुभाष चंद्र, डॉ. राजीव कुमार, डॉ. सोनम, डॉ. इंदिरा आदि मौजूद रहे। संवाद

विद्यार्थियों को दी रक्तदान की जानकारी

भिकियासैंण (अल्मोड़ा)। भिकियासैंण महाविद्यालय में रक्तदान से जुड़ी भ्रांतियां, उनके निवारण और रक्तदान का महत्व विषय पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस मौके पर प्राचार्या प्रोफेसर शर्मिला सक्सेना ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को स्वेच्छा से रक्तदान कर दूसरों की जान बचाने के लिए आगे आना चाहिए। साथ ही विद्यार्थियों को रक्तदान से जुड़े स्वास्थ्य फायदों की भी जानकारी दी। संयोजक डॉ. दयाकृष्ण ने रक्तदान से जुड़ी भ्रांतियों और रक्तदान के महत्व के बारे में जानकारी दी। संवाद

भिकियासैंण महाविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में मौजूद विद्यार्थी व अन्य। स्रोत- महाविद्यालय

भाषण में शालिनी, क्विज में निशा रही प्रथम

भिकियासैंण (अल्मोड़ा)। स्वीप कार्यक्रम के तहत भिकियासैंण महाविद्यालय में भाषण, क्विज और ड्राइंग प्रतियोगिताएं हुईं। शुक्रवार को कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य शर्मिला सक्सेना ने की।

भाषण प्रतियोगिता में शालिनी जोशी प्रथम, निशा रावत द्वितीय और सुषमा तृतीय, क्विज में निशा रावत प्रथम, शालिनी जोशी द्वितीय और हर्षिता ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। ड्राइंग प्रतियोगिता में रश्मि भंडारी प्रथम, हर्षिता द्वितीय और कंचना आर्या ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। निर्णायक डॉ. इला बिष्ट, डॉ. दीपा लोहनी, डॉ. सुभाष चंद्र आर्य थीं। इस मौके पर स्वीप प्रभारी डॉ. दिनेश कुमार, डॉ. विश्वनाथ पांडे, डॉ. परितोष उप्रेती आदि मौजूद रहे। संवाद

विज्ञान जीवन के हर पहलू में मददगार

भिकियासैंण। डा. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय के भौतिक विज्ञान विभाग ने ऑनलाइन माध्यम से व्याख्यान कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम संरक्षक प्रो. प्राचार्य शर्मिला सक्सेना ने मुख्य वक्ता का स्वागत किया।

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता प्रो. अमिता चंद्रा, प्रो. भौतिकी एवं खगोल भौतिकी विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय ने अपने व्याख्यान में कहा कि विज्ञान केवल प्रयोगशालाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि हमारे जीवन के हर पहलू को आकार देता है। उन्होंने यह भी रेखांकित किया कि तकनीकी क्रांति उन भौतिक अवलोकनों और सिद्धांतों की सफलता की कहानी है, जिन्हें कभी सिर्फ सैद्धांतिक ज्ञान माना गया था। उन्होंने सॉलिड स्टेट आयोनिक्स के उद्भव में प्रकाश डालते हुए बताया कि सॉलिड स्टेट आयोनिक्स का उद्भव ऐसे युग में हुआ, जब वैज्ञानिक समुदाय पारंपरिक ठोस पदार्थ के व्यवहार को नई दृष्टि से देखना शुरू कर रहा था। कार्यक्रम के संचालन में संयोजक डा. इंदिरा की महत्वपूर्ण भूमिका रही। अंत में कार्यक्रम के सह संयोजक डा. दयाकृष्ण ने मुख्य वक्ता प्रतिभागियों एवं आयोजन समिति का आभार व्यक्त किया।

इस दौरान महाविद्यालय के समस्त प्राध्यापक, शिक्षणेत्तर कर्मचारी एवं छात्र-छात्राओं सहित 50 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया।

उद्‍घाटन मैच में भिकियासैंण ने चंपावत कॉलेज को दी पटकनी

लोहाघाट (चंपावत)। राजकीय पीजी कॉलेज लोहाघाट में दो दिवसीय अंतर महाविद्यालय स्तरीय पुरुष वर्ग की कबड्डी प्रतियोगिता शुरू हो गई है। प्राचार्य प्रो. संगीता गुप्ता की अध्यक्षता में आयोजित प्रतियोगिता का शुभारंभ मुख्य अतिथि पालिकाध्यक्ष गोविंद वर्मा ने किया।

क्रीड़ाधिकारी लियाकत अली ने बताया कि प्रतियोगिता में आठ महाविद्यालयों की टीमें भाग ले रही हैं। प्रतियोगिता का उद्घाटन मुकाबला भिकियासैंण और चंपावत के बीच खेला गया। भिकियासैंण ने चंपावत को 30-29 से हराया। दूसरे मैच में लोहाघाट ने रानीखेत को 35-10 से हराया।

तीसरे मैच में अल्मोड़ा ने पिथौरागढ़ को 25-18 से हराया और चौथे मैच में खटीमा ने बागेश्वर को 25-19 से हराकर सेमीफाइनल में प्रवेश किया। वहां क्रीड़ा समिति के डॉ. रवि सनवाल, क्रीड़ा प्रभारी डॉ. रुचिर जोशी, डॉ. कमलेश शक्टा, दिनेश राम, उपेंद्र चौहान, मीना कुमारी, दिनेश व्यास आदि थे। संवाद

भिकियासैंण में सभी नामांकनपत्र वैध पाए गए

भिकियासैंण। राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में छात्रसंघ चुनाव के लिए अध्यक्ष पद पर गीताजंली, विवि प्रतिनिधि पद पर धीरज बिष्ट और कोषाध्यक्ष पद पर सुमित रावत के नामांकनपत्र वैध पाए गए हैं। प्राचार्य प्रो. शर्मिला सक्सेना और निर्वाचन अधिकारी डॉ. सुभाष चंद्र ने बताया कि नामांकनपत्रों की जांच के बाद निर्विरोध निर्वाचन की स्थिति स्पष्ट हो गई है। संवाद

छात्रसंघ चुनाव को लेकर बैठक

भिकियासैंण। डा. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय में छात्रसंघ चुनाव को देखते हुए छात्रसंघ समिति एवं संभावित प्रत्याशियों ने बैठक आयोजित की। बैठक की अध्यक्षता महाविद्यालय की प्राचार्य प्रो. शर्मिला सक्सेना ने की। बैठक में लिंगदोह समिति की संस्तुतियों, चुनाव आचार संहिता, नामांकन प्रक्रिया और अनुशासन संबंधी निर्देशों की विस्तृत जानकारी दी गई। संभावित प्रत्याशियों को स्पष्ट किया गया कि चुनाव निष्पक्ष, शांतिपूर्ण और शैक्षिक माहौल में संपन्न कराया जाएगा। प्राचार्य प्रो. सक्सेना ने सभी छात्रों से अपील की कि वे महाविद्यालय के अनुशासन को बनाए रखते हुए चुनाव प्रक्रिया में भाग लें और स्वस्थ लोकतांत्रिक परंपरा को बढ़ावा दें। बैठक का संचालन छात्रसंघ प्रभारी डा. सुभाष चंद्र ने किया। उन्होंने उपस्थित सभी संभावित प्रत्याशियों को चुनाव प्रक्रिया से संबंधित नियमों की जानकारी दी।

भिकियासैंण। डा. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में छात्र संघ चुनाव के तहत तीन प्रत्याशियों ने नामांकन कराया था। गुरुवार को नामांकन जांच समिति ने समस्त पत्रों की जांच की , जिसमें अध्यक्ष पद पर गीताजंली, विश्वविद्यालय प्रतिनिधि पद पर धीरज बिष्ट और कोषाध्यक्ष पद पर सुमित रावत के नामांकन प्रपत्र वैध पाये गए। महाविद्यालय की प्राचार्य प्रोफेसर शर्मिला सक्सेना और निर्वाचन अधिकारी डॉ. सुभाष चंद्र ने जानकारी दी कि नामांकन पत्रों की जांच के बाद निर्विरोध निर्वाचन की स्थिति स्पष्ट हो गई है।

मीमांसा

अरुंधति रॉय की नई पुस्तक “मदर मेरी कम्स टू मी” एक अत्यंत निजी, भावनात्मक और आत्ममंथन से भरी हुई कृति है। यह पुस्तक उनके जीवन की सबसे प्रभावशाली और विरोधाभासी शख्सियत — उनकी माँ, मैरी रॉय — के इर्द-गिर्द घूमती है। मैरी रॉय भारतीय नारी आंदोलन की एक प्रतीकात्मक व्यक्तित्व रही हैं, जिन्होंने केरल में महिलाओं के उत्तराधिकार अधिकारों के लिए सुप्रीम कोर्ट तक संघर्ष किया और एक स्कूल की स्थापना कर स्त्री-शिक्षा को नया आयाम दिया। लेकिन अरुंधति रॉय इस संस्मरण में अपनी माँ को केवल एक नायिका के रूप में नहीं, बल्कि एक जटिल, मानवीय और कभी-कभी कठोर व्यक्ति के रूप में चित्रित करती हैं।

पुस्तक की शुरुआत 2022 में मैरी रॉय के निधन के बाद की गहरी रिक्तता से होती है। रॉय उस शून्य को भरने के लिए अपनी स्मृतियों में लौटती हैं — अयमनम के घर, केरल के पहाड़ी दृश्यों, और एक ऐसे बचपन में जहाँ प्रेम और अनुशासन का संघर्ष साथ-साथ चलता था। लेखिका दिखाती हैं कि कैसे एक विद्रोही माँ का जीवन उनकी अपनी वैचारिक यात्रा का आधार बना — एक ऐसी यात्रा जिसमें असहमति, स्वतंत्रता और संवेदनशीलता के बीज बचपन में ही बो दिए गए थे।

अरुंधति रॉय की भाषा हमेशा की तरह गहरी और काव्यात्मक है। उनकी गद्य शैली में साहित्यिक सौंदर्य और भावनात्मक सच्चाई का अद्भुत संतुलन है। वे अपनी माँ के जीवन को न किसी महिमा मंडन के साथ प्रस्तुत करती हैं, न ही किसी आरोप के रूप में। बल्कि यह संस्मरण एक संवाद है — प्रेम और पीड़ा, प्रशंसा और विरोध, निकटता और दूरी — सब कुछ एक साथ।

मैरी रॉय को रॉय एक ऐसी स्त्री के रूप में दिखाती हैं जो अपने समय से आगे थीं, लेकिन जिनकी कठोरता ने उनके बच्चों के जीवन में घाव भी दिए। यह द्वंद्व पूरे संस्मरण में बना रहता है — माँ एक योद्धा भी है और एक नियंत्रक भी, प्रेरणा भी है और भय का स्रोत भी।

रॉय की लेखनी में व्यक्तिगत अनुभवों के साथ-साथ सामाजिक संदर्भों की गहराई भी झलकती है। वे यह स्पष्ट करती हैं कि किसी स्त्री के निजी जीवन के संघर्ष केवल व्यक्तिगत नहीं होते — वे समाज की संरचनाओं से टकराते हैं। इस तरह "मदर मेरी कम्स टू मी" केवल एक पारिवारिक संस्मरण नहीं, बल्कि भारतीय समाज में स्त्री की स्वतंत्रता और उसकी कीमत पर लिखा गया एक सामाजिक दस्तावेज़ बन जाता है।

कभी-कभी पुस्तक की भावनात्मक तीव्रता इतनी अधिक हो जाती है कि पाठक को साँस लेने के लिए विराम लेना पड़ता है। लेकिन यही उसकी शक्ति भी है — वह भावनाओं से नहीं भागती, बल्कि उन्हें पूरी ईमानदारी से जीती है। अरुंधति रॉय किसी निष्कर्ष या सुलह की तलाश नहीं करतीं; वे जीवन को उसकी अधूरी, जटिल, विरोधाभासी सच्चाई में स्वीकार करती हैं।

कुल मिलाकर, "मदर मेरी कम्स टू मी" एक ऐसी पुस्तक है जो माँ-बेटी के रिश्ते की सीमाओं और संभावनाओं दोनों को उजागर करती है। यह मातृत्व की मिथकीय छवि को तोड़ती है और दिखाती है कि प्रेम हमेशा कोमल नहीं होता — कभी-कभी वह तीखा, अनुशासनात्मक और कठोर भी होता है।

यह पुस्तक अरुंधति रॉय की अब तक की सबसे ईमानदार और आत्मनिष्ठ कृतियों में से एक है — जो न केवल उनके व्यक्तिगत जीवन की परतें खोलती है, बल्कि पाठक को अपने जीवन, अपने रिश्तों और अपनी जड़ों की ओर झाँकने के लिए भी प्रेरित करती है।

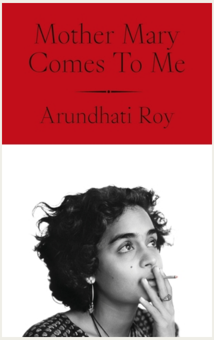

डा० परितोष उप्रेती
सह-सम्पादक
ई पत्रिका - गगास

महाविद्यालय परिवार

प्राचार्य

प्रो॰ (डॉ॰) शर्मिला सक्सेना

प्राध्यापक वर्ग

अर्थशास्त्र विभाग

डॉ॰ विश्वनाथ पाण्डेय
(असि॰ प्रोफेसर)

हिन्दी विभाग

डॉ॰ सुभाष चन्द्र आर्य
(असि॰ प्रोफेसर)

राजनीति विज्ञान विभाग

डॉ॰ दिनेश कुमार
(असि॰ प्रोफेसर)

इतिहास विभाग

डॉ॰ दीपा लोहनी
(असि॰ प्रोफेसर)

समाजशास्त्र विभाग

डॉ॰ इला बिष्ट
(असि॰ प्रोफेसर)

अंग्रेजी विभाग

डॉ॰ कौशल कुमार
(असि॰ प्रोफेसर)

भूगोल विभाग

डॉ॰ पारितोष उप्रेती
(असि॰ प्रोफेसर)

वाणिज्य विभाग

डॉ॰ गौरव कुमार
(असि॰ प्रोफेसर)

डॉ॰ राजीव कुमार
(असि॰ प्रोफेसर)

वनस्पति विज्ञान विभाग

डॉ॰ सोनम
(असि॰ प्रोफेसर)

जन्तु विज्ञान विभाग

डॉ॰ दयाकृष्ण
(असि॰ प्रोफेसर)

रसायन विज्ञान विभाग

डॉ॰ साविर हुसैन
(असि॰ प्रोफेसर)

भौतिकी विज्ञान विभाग

डॉ॰ इंदिरा
(असि॰ प्रोफेसर)

कार्यालय

श्री गौरव कुमार
(कनिष्ठ लिपिक)

श्री प्रदीप कुमार (उपनल)
(कनिष्ठ लिपिक)

प्रयोगशाला सहायक

श्री बिरेन्द्र राम
(जन्तु विज्ञान)

श्री शेरसिंह
(भौतिक विज्ञान)

अनुसेवक

श्री पूरन जलाल (उपनल)

श्री श्याम सुन्दर (उपनल)

श्री सुरेश कुमार (उपनल)

श्री सतीश कुमार (उपनल)

Info Desk

College Website- https://gdcbhikiyasain.in/

College Fb ID- https://www.facebook.com/photo/?fbid=525965566878099&set=a.525965573544765

College Youtube - UCV7z6yOzKf2rhW4jz9qzBfA

SSJU Website- https://www.ssju.ac.in/

Routes to Roots- https://r2rdigital.routes2roots.com/

Skill Development Programme-
https://www.msde.gov.in/

Anti-Ragging-
https://www.antiragging.in/affidavit_affiliated_form.php

Anti Drug-
https://pledge.mygov.in/fightagainstdrugabuse/